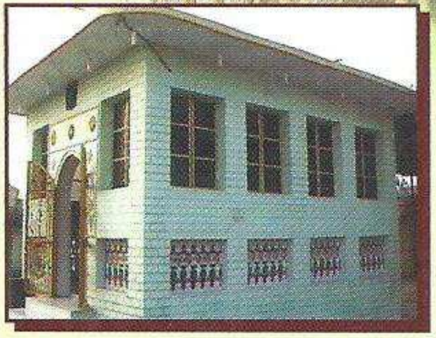
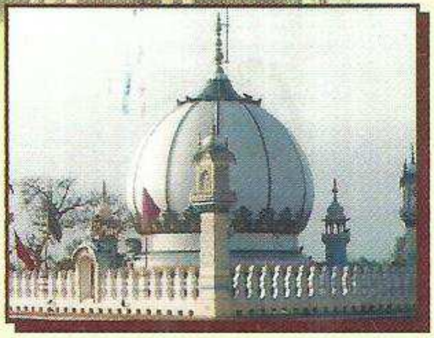
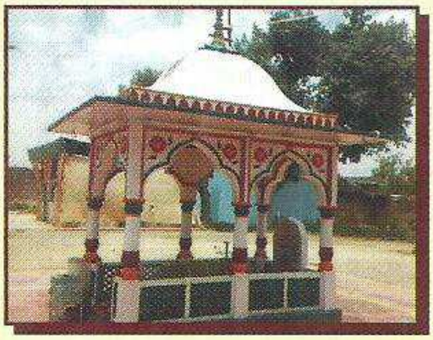
तज़किरा
मशाएख़-ए-इज़ाम









Printed by: UZMA SCREEN Vns. #9369138837

तज़्किरा

मशाएख़-ए-इज़ाम

हस्बे इरशाद

ख़्वाजा मुहम्मद सबाहत हसन शाह फसाहती

सज्जादा नशीन दरगाह अकदस दादा मियाँ (लखनऊ)

व दरगाह इनायती राहती फसाहती, भैंसोड़ी शरीफ

ज़िला रामपुर (यू०पी०)

तालीफ

शैखुल उलूम मौलाना मुफ्ती अबुल महमूद मुहम्मद

साहब मज़हरी फसाहती

बनारस

नाम किताबः

तज़किरा मशाएख-ए-इज़ाम

मुअल्लिफः

मुफ्ती अबुल महमूद मुहम्मद साहब
मज़हरी फसाहती, बनारस

नाशिरः

सूफी हाजी मंजूर अहमद नासिर फसाहती
रामपूरी, बनारसी
मरकज़ी दारुल इशाअत
दरगाह हुजूर दादा मियाँ रोड, मॉल इवेन्यू, लखनऊ

कम्पोज़िंग व प्रिंटिंगः

उज़्मा स्क्रीन
मदनपुरा, बनारस। फोन : 0542-2451300

हदियाः 25 रुपये

तबाअत-ए-अव्वलः

1432 हि० मुताबिक 2011 ई०

तबाअत-ए-दोमः

1433 हि० मुताबिक 2012 ई०

फहरिस्त

पेश लफ्ज़

पेश लफ्ज़ किताब "तज़किरा मशाएख-ए-इज़ाम" के फिलहाल लिखावट दो हैं (1) उर्दू राइटिंग (2) हिन्दी राइटिंग। हिन्दी लिखावट में पढ़ने वाले को यही महसूस होगा कि मैं उर्दू किताब पढ़ रहा हूँ, सीरत उर्दू है मगर सूरत हिन्दी है। राइटिंग बदली है मगर ज़बान वही है। शक्ल और है मगर शब्द और अर्थ वही है। साग़र नया है मगर लज़्ज़त वही है। ताकि उर्दू वाले भी रहें मगन और हिन्दी वाले भी रहें खुश।

आज मेरी अथाह खुशियों की कोई हद नहीं कि मैं अपनी इस तालीफ (किताब) को अपने पीर-व-मुर्शिद हुजूर आका-ए-नेअमत सनदुल औलिया ख़्वाजा अल्हाज मुहम्मद फसाहत हसन शाह कुद्दुस सिर्रहु की बारगाह में नज़्र करके अपनी बहुत बड़ी खुश नसीबी बावर कर रहा हूँ। दुआ है कि इलाहल आलमीन बतुफैल खैरुल अनाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस किताब को और तमाम किताबों को मुफीद, मकबूल ज़खीर-ए-आखिरत, वसील-ए-मग़फिरत बनावे। आमीन!

बिजाहे हबीबिहि अलैहित्तहैय्यतु वत्तस्लीम।

खाकपाए मुर्शिद

अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फसाहती

बनारस

23 रमज़ानुल मुबारक 1431 हि०

मुताबिक 3 सितम्बर 2010 ई० बरोज़ जुम्आ मुबारक



हुज़ूर कुत्बुल आरेफीन ख्वाजा **मुहम्मद नबी रज़ा शाह** रज़ी अल्लाह अन्हु

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हुज़ूर कुत्बुल आरेफीन ख़्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह रज़ी अल्लाह अन्हा

नाम, नसब, उर्फियतः

नाम अक्दस 'नबी रज़ा' 'मुहम्मद' ये नामे पाक सिर्फ हुसूले बरकत के लिये है। जिसका तर्जुमा ये है 'नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशनूदी चाहने वाले' रज़ाए नबवी ही मुस्लिम की असली मेराज है। यही मोमिन का मतलूब व मकसूद है। यही वो बेमिसाल दौलत है जिसके तवस्सुल से रज़ाए इलाही, इरफाने रब्बानी की लाफानी नेमत नसीब होती है जो पूरे ईमान व इस्लाम का हासिल है। वालिद बुजुर्गवार का नामे गेरामी मौलाना हसन रज़ा है अलैहिर्रहमत व रिज़वान मु० १३०४ हिजरी ये ख़ानदान आला सलीमुन्नसब, पाक हस्ब नसलन अफ़ग़ानी है। आप की ज़िन्दा जावीद 'दादा मियाँ' हैं। आप की विलादत नेमत २५ रबीउल अव्वल शरीफ १२८४ हिजरी मुताबिक १८६७ ई० बरोज़ दो शम्बा भैंसोड़ी शरीफ ज़िला रामपुर यूपी में ऐसे बाबरकत घराने में हुई है जो शुरु ही से आज तक हसब, नसब, करामत, शराफत में कद व क़ामत में हुस्न व जमाल में गौहर नायाब और यक्ताए ज़माना हैं। जिस्मानी कुव्वत का ये आलम है कि हर पहलवान आपकी ताक़त के सामने ज़ेर है। सच है कि आप हुज़ूर सय्यदना मौलाए मुस्लिमीन शेरे खुदा अली मुर्तज़ा करमल्लाह वजहहू की असदे इलाही, कुव्वते यज़दानी के परतौ जमील हैं। इसी खूबी की बुनियाद पर आप के पीर व मुरशिद हुज़ूर सय्यदना फखरुल आरेफीन मौलाना सय्यद शाह ख़्वाजा अब्दुल हई चाटगामी रज़ी अल्लाह अन्हा ने आपको 'असदे जहाँगीरी' का ऐसा बुलन्द मकाम अता फरमा दिया कि असदे जहाँगीरी 'जहाँगीरी शेर' ये ख़िताब आपके नामे पाक का अटूट हिस्सा हो गया। मुर्शिद की अता का कोई जवाब और बदल नहीं। जहाँगीरियों, रज़ाइयों, राहतियों, फसाहतियों, शकूरियों, पीरो मुर्शिद से कैसी अक़ीदतो मुहब्बत, इश्क व शैफतगी, ताज़ीम व तकरीम

होनी चाहिए हुजूर दादा मियाँ कुद्दस्सिर्रहू की बारगाह से सीखो। ये बिल्कुल बेदाग, शफ्फाफ हकीकत है कि यादे इलाही शाने मुरतज़वी रंग हुज़ूर दादा मियाँ की अदा अदा से बाल बाल से हर रुख़ से हर तरह से नुमाया है।

शैख़े तरीकतः

आपके पीर व मुर्शिद शैख़ इरफान व तरीकत तमाम उलूम व मारुफ सुलूक व तसव्वुफ के इमाम हुज़ूर सय्यदना फख़रुल आरेफीन मौलाना सय्यद शाह ख़्वाजा अब्दुल हई चाटगामी रज़ी अल्लाह अन्हा मु० १३३६ हि० ने अपने महबूब मुरीद मुराद को अपनी रहमती गोद में लेकर ऐसी करामत मआब तरबीयत फरमाई कि इसरारे शरीअत मारुफ व एहसान, सुलूक व तसव्वुफ का ऐसा सायादार, फलदार घना शजरे तूबा बना दिया कि जिसकी अनगिनत शादाब, सदाबहार शाख़ें इनायती, राहती, फसाहती, शकूरी रुप में चारों जानिब फैल गयीं। क्या मशरिक, क्या मग़रिब, क्या शुमाल, क्या जुनूब हर जगह हर तरफ जहाँगीरी, रज़ायी नेमतों की बरसात हो रही है और मुकद्दर के धनी खूब जी भर कर सैराब हो रहे हैं और सच भी है कि जब नूर व रहमत का अब्रे बाराँ बरसता है तो थमता ही नहीं।

ख़्वाजा और कुतुब के मानेः

ये एक बेलाग हक़ीक़त है कि 'ख़्वाजा' को 'ख़्वाजा' ही, 'कुतुब' को 'कुतुब' ही पहचानता है। आपके पीरो मुर्शिद हुज़ूर सय्यदना शाह ख़्वाजा फख़रुल आरेफीन कुद्दुस्सिरहू ने खुद इरशाद फरमाया है कि 'नबी रज़ा को ख़्वाजगी और कुतबियत का मक़ाम हासिल है। दरगाह मुर्शिद से ये ऐसी सनद है जिसका कोई जवाब नहीं। ये है मुहब्बत, ये है करम। मुरीद वही है जिसको उसका पिया चाहे। हम लाख अपने को मुरीद, मुरीद की बराबर रट लगाते रहें तो क्या हासिल? हाँ बस एक मरतबा पीर अपनी कुशादा ज़रफी से, प्यार भरी अदा से फरमा दें कि हाँ तू मेरा मुरीद है, मुराद है, मैं तेरा पीर हूँ मुर्शिद हूँ तो फिर क्या? पीरी मुरीदी का हासिल मिल गया। हम हर सांस अपने को बन्दा, बन्दा कहते रहें तो क्या फायदा? हाँ ये रट, ये आवाज़ नफा बख़्श तो जब है कि वो फरमा दें तू

मेरा बन्दा है मैं तेरा परवरदिगार हूँ।

अब इन सुतूरे बाला के बाद 'ख़्वाजा और कुतुब' के माने दिलो दिमाग़ में जमा लो। 'ख़्वाजा' तुर्की लफ्ज़ है, बाज़ अरबाबे लुग़त ने फारसी भी बताया है। इस लफ्ज़ के कई मायने हैं (१) सरदार (२) मालिक (३) पीर (४) हाकिम वग़ैरह और ये तमाम मायने दादा हुज़ूर के लिये बिल्कुल फिट हैं। लफ्ज़े 'ख़्वाजा' का तकद्दुस, वक़ार, एहतेराम को मलहूज़ रखना चाहिये। मैंने कई लोगों की तहरीरों में लफ्ज़े ख़्वाजा को नामों के साथ लगा देखा है, मकामे ख़्वाजगी के ये लोग क़तअन मुसतहिक नहीं हैं, लफ्ज़े ख़्वाजा को गिरा रहे हैं, जो किसी तरह मुनासिब नहीं।

'कुतुब' ये खालिस अरबी लफ्ज़ है जिसके मानी बकसरत हैं, मुफीद मकसूद मानी ये हैं (१) चक्की का खूंटा जिसके गिर्द चक्की घूमती है (२) एक सितारा जिससे किब्ला का सिम्त मालूम होता है (३) जिस पर काम का दारोमदार हो (४) सरदारे क़ौम (५) वक़्त की बेमिसाल हस्ती वगैरह ये तमाम मायने हुजूर दादा मियाँ कुद्दस्सिर्रहु पर पूरी तरह सादिक हैं। लेकिन यहाँ पहले मायने की वज़ाहत करनी मकसूद है। अपने ज़माने के तफ्सीर व हदीस, फेक़ा व तसव्वुफ, उलूमे अरबियत के सबसे बड़े माहिर और राज़दां अल्लामा इमाम मुजद्देदीन शीराज़ी मु० ८१० हि रहमतुल्लाह अलैह अरबी लुग़त की निहायत ही मुस्तनद किताब 'कामूस' में लिखते हैं "वो खूंटा जिसके गिर्द चक्की घूमती है।" इस मायने से बहुत शफ्फाफ रौशनी मिली कि जो वलियों का खूंटा होता है उसके गिर्द हुक्मे इलाही से सारा निज़ाम गर्दिश करता है। ऐसे ही बाकमाल वलियों को कुतुब, अब्दाल, अवताद कहते हैं।

देखो चक्की में हज़ार, बेशुमार दाने डाले जाते हैं और सब पिस कर पीसान हो जाता है मगर किस्मत के ज़ोर और वो दाने बिल्कुल सालिम और महफूज़ रहते हैं जो चक्की के खूंटे से बिल्कुल चिमटे और सटे रहते हैं। हम सब खुश नसीबाने फैज़ाने मुर्शिद से हुजूर कुत्बुल आरेफीन ख़्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह उर्फ दादा मियाँ कुद्दस्सिर्रहु के दामने आफियत से पूरी तरह चिमटे हुए हैं। इन्शा अल्लाह हम सब वाबस्तेगान तमाम आफत व बलय्यात से बिल्कुल हिफ्ज़ो अमान में रहेंगे। आमीन!

आयते मुबारका की तफ्सीर में पूरी सराहत के साथ ये बयान है कि इस आयते तय्यबा से तक्वीनी उमूर के फरिश्ते मुराद हैं जिनसे आलम का इन्तेज़ाम वाबस्ता है खुसूसन हुजूर सय्यदुल मलायक हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इसराईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम मुराद हैं। हज़रत इमाम ग़ज़ाली, हज़रत इमामा राज़ी, हज़रत इमाम क़ाज़ी नसीरुद्दीन बैज़ावी वगैरह कुदसत इसरारहुम ने बहुत ही शरह व बस्त और तहक़ीक़ से लिखा है कि ये इन्तेज़ामे ग़ौस कुतुब और अब्दाल से भी मुताल्लिक है।

हर नेमत फैज़ाने मुर्शिद सेः

हुज़ूर शैख इमाम अब्दुल हक मोहद्दिस देहलवी रज़ी अल्लाह अन्हा "एखयार उल खेयार" (मकातिब व रसाएल) सफा ३७७ में लिखते हैं कि "कहीं से भी जो फायदा हासिल हो उसको अपने पीर ही की जानिब से जाने, उसी में सआदत मन्दी, अक़ीदत की पुख्तगी, निसबत की सलामती है। इसी बुनियाद पर 'मुर्शिद' को आक़ाए नेमत कहते हैं।"

हर ऐसी चीज़ जिसका ताल्लुक, लगाओ शैखे तरीकत से है, हस्बे मरातिब अक़ीदत, मोहब्बत, ताज़ीम करनी लाज़मी है, पीरो मुर्शिद के आबाए वाजिद से, पूरे खानवादे से, पीरानी मख़दूमा से, साहबज़ादगान से, खुसूसन सज्जादा नशीन से, मुर्शिद के बिरादराने अज़ीज़ी से, पीर भाइयों से वालेहाना शेफ्तगी ज़रुरी है। हासिल बयान ये है कि हर ख़ैरो बरकत का वसीला अपने शैख़े तरीकत ही को जाने, माने।

हुज़ूर महबूबे इलाही की बारगाह से क़लन्दर ने अपने पीर ही का एहसान मानाः

हुज़ूर सय्यदना सरकार महबूबे इलाही मोहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया रज़ी अल्लाह अन्हा मु० ७२५ हिजरी की बारगाहे आली में तीन भूखे क़लन्दर हाज़िर हुए और खाना माँगा, हुज़ूर ने ख़ादिमों को खाने खिलाने का हुक्म फरमाया, इनमें से एक कलन्दर ने खाना उठा कर फेंक दिया और बोला कि इससे अच्छा खाना लाओ। हुज़ूर ने उस क़लन्दर की इस नाज़ेबा हरकत का कुछ ख़्याल नहीं फरमाया और उससे बेहतर खाना लाने का हुक्म दिया। क़लन्दर ने उस खाने को भी उठा कर फेंक दिया और उससे बढ़िया खाना तलब किया। अब हुज़ूर ने उस कलन्दर को

अपने पास बुला कर कान में इरशाद फरमाया कि ये खाना तो उस मुरदार बैल से अच्छा था जो तुमने रास्ते में खाया था। इतना सुन कर क़लन्दर का हाल मुतग़ैर हो गया और हुज़ूर के क़दमों पर गिर पड़ा। हुज़ूर ने उस का सिर उठाया और अपने सीने से लगा कर जो अता करना था अता कर दिया। अब वो क़लन्दर वज्द व रक्स करता जा रहा है और कहता जा रहा है कि मेरे पीरो मुर्शिद ने ये नेमत अता फरमाई है। हाज़ेरीने मजलिस बोले कि अरे नादान तुमको तो ये दौलत हमारे हुज़ूर ने अता फरमाई है तू यहाँ ख़ाली आया था। क़लन्दर बोला कि नादान मैं नहीं हूँ, बेवकूफ तो तुम लोग हो, अगर मेरे शैख़े तरीकत ने नज़रे करम न की होती तो हुज़ूर तवज्जो न फरमाते, ये मेरे मुर्शिद ही का फैज़ाने असर है। अब हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि ये क़लन्दर सच कहता है मुरीदी इसी क़लन्दर से सीखो। (अलमलफ़ूज़ सफा १३ आला हज़रत कुद्दस्सिरहु)

शाहाने वक़्त, शरीअत के ओलेमा और इमाम दरवेशों की दहलीज़ पर:

ये एक वाशेगाफ हक़ीक़त है कि हमेशा से बादशाहे वक़्त, हुकूमत के सरबराह अपनी ख़ाली झोलियाँ लेकर अल्लाह वालों की चौखटों पर हाज़िर होते रहे हैं और अल्लाह वाले उनको बामुराद करते रहे हैं। क़दीम हिन्दुस्तान के अकेले ताजदार शहंशाह हुज़ूर ख़्वाजए ख़्वाजगान ग़रीब नवाज़ों के ग़रीब नवाज़ हुज़ूर सय्यदना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रज़ी अल्लाह अन्हा व रज़ा अना के बाबे करम से नवाज़े जा रहे हैं, कोई तफरीक़ नहीं, कोई तक़्सीम नहीं, कोई भेद-भाव नहीं सब मालामाल होकर नेहाल हो रहे हैं। इसी अजमेरी चिश्ती जूदो सख़ा का चश्मए साफी दादा हुज़ूर कुद्दस्सिरहु के दरबारे आली से रवाँ-दवाँ है। सिर्फ यही नहीं बल्कि शरीयते मुतह्हरा के बलन्द मरतबा ओलेमा और इमामो ने दरवेशों की बारगाहों में हाज़िरी को अपनी खुशनसीबी जान कर रुहानी नेमत व दौलत हासिल की है। हज़रत इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम कुशैरी रज़ी अल्लाह अन्हा मु० ४६५ हि० जो बयक वक़्त तमाम उलूम व मारुफ के नापैदा किनारे समन्दर हैं जिनसे हुज़ूर सय्यदना दाता गंजबख़्श लाहौरी मु० ४६५ हि० और हुज़ूर इमाम ग़ज़ाली रज़ी अल्लाह अन्हा मु० ५०५ हि० ने काफी

फायदा हासिल किया है। 'कुशैरिया' सफा ३७८ में लिखते हैं, जिसका तशरीही तर्जुमा ये है 'हर ज़माने में सूफिया इज़ाम का कोई न कोई शैख़ ज़रुर रहा है ओलमा और शरीयत का इमाम उनके सामने बड़ी ख़ाकसारी के साथ सर तस्लीमे ख़म कर दिया है और बरकत व फैज़ हासिल किया है।"

साहबज़ादाः

हुजूर दादा मियाँ रज़ी अल्लाह अन्हा को एक ही फरज़न्द अर्जमन्द 'सुल्तान हसन मियाँ' पैदा हुए जो सोलह साल की उमर में आपकी हयाते मुबारका ही में परदा हर गये नूर अल्लाह मुरक़दा' जो भैंसोड़ी शरीफ की आबाई क्रबस्तान में मदफून हैं।

अहलिया मुबारकाः

आपकी अहलिया मुबारका यानी दादी मख़दूमा रहमतुल्लाह अलैहा का रौज़ए मुकद्दसा दादा हुजूर कुद्दुस्सिरहु के रौज़ए मुबारका से चन्द फिट के फासले पर मख़ज़ने अनवार है। आप वलिया, आरेफा होने के साथ-साथ बहुत ही कामयाब घरेलू मुन्तज़मा भी थीं। अपने शौहरे मोहतरम दादा हुजूर से बैत थीं और ये बहुत बड़ी बात है कि बीवी शौहर से मुरीद हो।

सज्जादा नशीन खुल़फए आज़म और अव्वल मुरीदः

आपके सज्जादा नशीन, खलीफए आज़म और पहले मुरीदे अव्वल, फूल व फल हुजूर शैखुल औलिया ख़्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह कुद्दस्सिरहु हैं जो आपके हक़ीक़ी बिरादरे अज़ीज़ भी हैं, जिनका ज़िक्रे अक़दस इस किताब में हुजूर दादा मियाँ के बाद ही है।

मुरीदीन ख़लीफए केरामः

मुरीदीन की तादाद तो हद शुमार से कहीं ज़्यादा है। बनारस में भी कई मुरीदीन थे, इस ख़ानवादे आली के सज्जादा नशीन, खोलफए इज़ाम की मक़बूलियत फौक़ुल इदराक है, अक्ल महवे हैरत है। जहाँ कहीं भी गए, जगह निहायत ही अजनबी, वहशत से भरी किसी से न कोई जान न पहचान, बिल्कुल बेगानी, मगर फैज़ाने मुर्शिद का ये असर ये पावर कि नुसरते इलाही, अल्ताफे नबवी अब्रे रहमत बन बरस रही है कि अब यही

बेगाने अपने हो रहे हैं। जोक दर जोक परवाना वार निसार हो रहे हैं, हलक़ए इरादत में दाख़िल हो रहे हैं और इस जहांगीरी, रज़ाई नेमत पाकर मगन और निहाल हो रहे हैं। बारगाहे इलाही में सजदए शुक्र अदा कर रहे हैं। अब इन अजनबियों, बेगानों की जुबानों पर ये तराना हैः

बड़ा करम किया अपना बना लिया तूने

और पीरों की ज़बानें ये गुनगुना रही हैं:

तोराब उसने जवानी में मुझे पीरी की नेमत दी
बनाया पीर है मुझको मैं अपने पीर के कुर्बां

हुज़ूर दादा मियाँ कुद्दस्सिरहु के तमाम ही खुलफा निहायत ही कामिल और इन्तेख़ाबे रोज़गार हैं। उन्हीं खुलफए केराम में हज़रत मौलाना अब्दुल शकूर नसीराबादी रहमतुल्लाह अलैह हैं जिन्होंने सिलसिलए अलिय्या, जहांगीरिया, रज़ाइया की खूब इशाअत की और ये सिलसिलए इशाअत आज भी जारी है। ये सिलसिला जहांगीरिया, रज़ाइया, शकूरिया के नाम से मशहूर है। हुज़ूर दादा मियाँ रज़ी अल्लाह अन्हा से वाबस्ता, पैवस्ता जितने खुलफए इज़ाम हैं रज़ाइया, इनायती, राहती, फसाहती, शकूरी सब ही पूरी लगन से इशाअत व तब्लीग़ में लगे हैं और इन्शा अल्लाह क़यामत तक मसरुफे अमल रहेंगे। आमीन!

विसाले पाक और उर्स मुकद्दसः

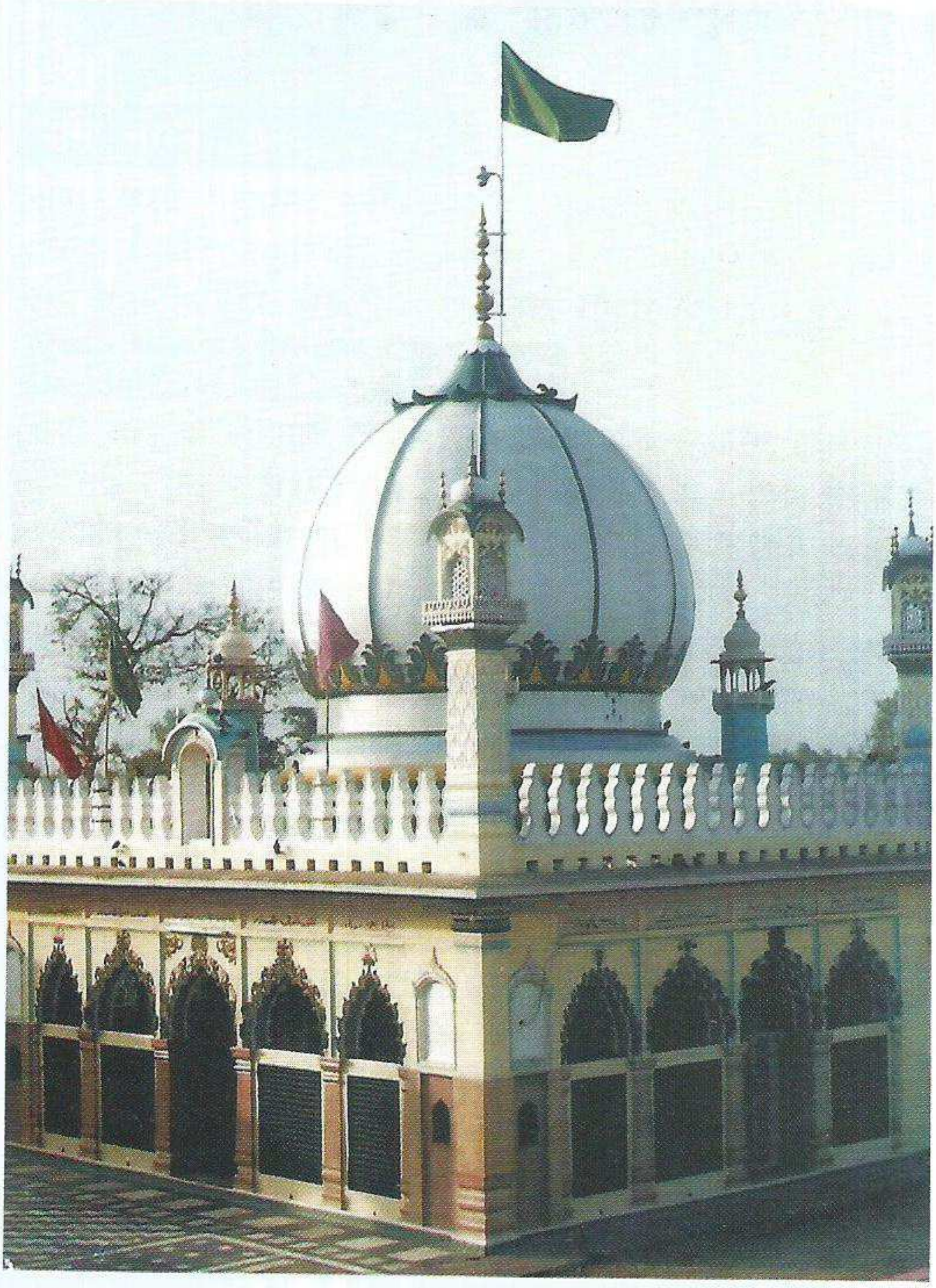
इन्सानियते कुबरा, कुतबियत, ग़ौसियत का ये आफताब आलमताब शरीअत व तरीक़त के अनवार व तजल्लियात से बन्दगाने खुदा को बहरावर करते हुए २४ रबीउल अव्वल शरीफ १३२६ हि० बरोज़ यकशम्बा दिन में १०:३० बजे बज़ाहिर गुरुब हो गया मगर इसकी ज़ियाबारी नूर अफशानी से आज भी सारी दुनिया जगमगा रही है। हुज़ूर दादा मियाँ अपनी हयाते ज़ाहिरी से कहीं ज़्यादा आज ज़िन्दा हैं। इसी हयाते जावेदानी के बारे में इरशादे कुरआनी है "मर्द हो या औरत जिस किसी ने भी काम अच्छे किये और वो मोमिन है तो हम उसकी यक़ीनन ज़रुर सुथरी ज़िन्दगी अता करते हैं।"

हर साल २१, २२, २३, २४, २५ रबीउल अव्वल शरीफ को बहुत ही एहतेमाम व इन्तेज़ाम के साथ हज़रत किब्ला साहिबे सज्जादा ख़्वाजा मोहम्मद सबाहत हसन शाह फसाहती मद्दज़िल्ला की सज्जादगी में

उर्से पाक होता है। बड़ा ही वसी आम लंगर होता है हर चार जानिब से ओलेमा व मशाएख़ आम व ख़ास का जम्मे ग़फीर उमड़ पड़ता है।

रौज़ए मुबारकः

आपका रौज़ए मुकद्दसा माल एवेन्यू, दादा मियाँ रोड, शहर लखनऊ है। रौज़े का लग़वी माने है बाग़, क्यारी। हदीसे पाक है कि जहाँ अल्लाह वाले महबूबाने खुदा दफन होते हैं वो जन्नत का हिस्सा होता है, जन्नती फर्श बिछा दिया जाता है, जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। मुनकिर व नकीर ये दोनों फरिश्ते 'नम कोनूमतुल उरुस'' का मुज़दा सुना कर रुख़सत होते हैं कि अब रहमतों के साये में दुल्हा और दुल्हन की तरह खूब मगन और निहाल होकर सो जाओ। हदीसे अक़दस के इसी लफ्ज़ 'उरुस' से उर्स मुबारक है। करामन कातिबैन जो कन्धे पर सवार होते हैं विसाल के फौरन बाद क़ब्रे अनवर के पास आ जाते हैं और बराबर ज़िक्रे इलाही, तक्बीर, तहलील, तस्बीह करते रहते हैं और सवाब साहिबे कब्र को पहुँचता रहता है। ये है ईसाले सवाब का सुबूत हदीसे मुबारका से। इंसानों से ग़लतियाँ हो सकती हैं मगर करामन कातिबैन से ग़लतियाँ हो नहीं सकती कि ये मासूम हैं और हर मासूम ग़लतियों से पाक है। तमाम अम्बियाए इज़ाम सलवातुल्लाह अलैहिम अजमईन और सब फरिश्ते अलैहिम इस्लाम मासूम हैं। उनसे ख़ता नामुमकिन है और हुजूर रसूलना व रसूलुलकुल सय्यदना मोहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अफज़लुर्रसूल अफज़लुल मासूमीन हैं। सल्लल्लाहो अलैह व आलेही व असहाबेही व औलियाही वसल्लिम।



हुजूर शैखुल औलिया

ख्वाजा अल्हाज **मुहम्मद इनायत हसन शाह** रहमतुल्लाह अलैह

हुजूर शैखुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत शाह रहमतुल्लाह अलैहि

नाम, नसब, लकब, उर्फियतः

नाम मुबारक "मुहम्मद इनायत हसन" लकब "शैखुल औलिया" उपनाम "चन्दा मियाँ" जन्मतिथी "22 मुहर्रमुल हराम 1302 हि०" जन्म स्थान और मज़ार अक़दस भैंसोड़ी शरीफ ज़िला रामपुर (यू०पी०) है।

बिरादरे बुजुर्ग की आगोशे शफकतः

अभी आप दो ही साल के थे कि आपके वालिदे मुकर्रम हज़रत मौलाना मुहम्मद हसन रज़ा शाह कुद्दुस सिर्रहु का 1304 हि० में साय-ए-आतेफत उठ गया। इस यतीमी के परदा में एक कुदरती राज़ ये भी पोशीदा था कि आगे चल कर आपको मुरीद और हुजूर कुतबुल आरेफीन ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह उर्फ दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैहि को सुपुर्द मुर्शिद होना कातिबे तक्दीर ने लिख दिया था। हदीस पाक है कि बड़ा भाई बाप की तरह होता है। दादा हुजूर ने बड़े भाई होने के नाते ज़ाहिरी लालन-पालन किया और पीर-व-मुर्शिद होने के लेहाज़ से रुहानी, मअनवी इरफानी तालीम-व-तरबियत तज़किय-ए-नफ्स, तत्हीरे रुह, तंवीरे कल्ब फरमाई।

खलीफ-ए-आज़म और सज्जादा नशीन भीः

आप हुजूर दादा मियाँ से सोलह साल की उम्र में मुरीद हुए हैं। आप गुलशन शाह रज़ा के अव्वल फूल, फल यानी पहले मुरीद हैं और खलीफ-ए-आज़म और सज्जादा नशीन हैं। आप ने सज्जादा नशीनी के वकार को बरकरार रखा। उसका हक पूरा पूरा अदा कर दिया। आपने सिलसिल-ए-अलिय्या, जहाँगीरिय्या, रज़ायिय्या की ऐसी मकबूल, मज़बूत, बेमिसाल खिदमत की है कि आज पूरी दुनिया में जहाँ कहीं भी रज़ाई फैज़ान है वह सब आप ही की देन है। आप ही की मेहनत का फल है। आपके मुरीदीन और खुलफा-ए-इज़ाम की एक बड़ी तादाद है। आपके हर

अज़ीज़, मुस्तनद, लाएक-ए-खलीफा ने सिलसिल-ए-अलिय्या. जहाँगीरिय्या, रज़ायिय्या, इनायतिय्या की खूब खूब इशाअत की है।

शैखुल औलिया का लकबः

''शैखुल औलिया'' आपका इम्तियाज़ी, इन्फिरादी, बड़ा ही बलन्द रुत्बा लकब है जिसका तर्जुमा ये है ''वलियों के पीर-व-मुर्शिद''। औलिया कबार में ये बहुत ही ऊँचा दरजा है। शैख का एक हम मानी लफ्ज़ कुरआन मजीद में ''मुर्शिद'' आया है, लुगत और इस्तेलाहात की रौशनी में जिसका मानी है अपने साथ रखना। ये तरीका बहुत ही आसान और महफूज़ है। भटकने, बहकने का कोई अंदेशा नहीं। सिर्फ मंज़िले मकसूद का पता देने में बहक जाने का, फिसल जाने का बहुत खतरा है।

अब पढ़ो कुरआन का ये फरमान ''या अय्युहल्लज़ीना आमनूत् तकुल्लाह व कूनू मअस्सादेकीन'' मोमिनो! अल्लाह से डरो और कामिल, सच्चों के साथ पूरी तरह से हो रहो। ज़बान के सच्चे, अमल के सच्चे, दिल के सच्चे हर तरह से सच्चे, पक्के मुर्शिद कामिल से मुरीद होने और साथ साथ रहने का इस आयते मुबारका में पूरा सबूत है। यकीनन आप ऐसे ही मुर्शिदि कामिल और ''शैखुल औलिया'' हैं।

आप सूफियों की ज़बानों पर ये एक बहुत ही मशहूर कौल ''मन ला शैख लहु फशैखुहुश्शैतान'' खूब रवाँ है। अपनी खास मजलिसों में अपने मुरीदों के सामने खूब पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं। जिसका मानी ये है कि जिसका कोई शैख न हो उसका उस्ताद शैतान है। बात सही है मुर्शिदि कामिल से मुरीद होना ज़रुरी है। वर्ना उस बेलगाम, आज़ाद शख्स को शैतान अपनी गिरफ्त में लेकर अपना मुरीद बना लेगा। मगर ये कौल ''मन ला शैख लहु फशैखुहुश्शैतान'' हदीस नहीं है बल्कि ये कौल हुज़ूर सुल्तानुल आरेफीन सैय्यदुना ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी 261 हि० रज़ी अल्लाहु अन्हु का है। बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ में यकीनी, मुतावातिर हदीस पाक है कि ''मन कज़्ज़बा अलैय्या मुतअम्मदन फलयत्तबू मकअदहु मिनन्नार'' ताकीद के साथ फरमाया है। यानि जिस किसी ने मुझ पर झूठ लगाया उसको ताकीदी हुक्म है कि वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। अलइबाज़ बिल्लाह जो हदीस नहीं है उसको हदीस बताना कितनी बड़ी वईद और कितना बड़ा अज़ाब है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे। आमीन!

उर्फियत चन्दा मियाँः

हुजूर शैखुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैहि की उर्फियत (उपनाम) "चन्दा मियाँ" है। बस्ती के लोग इन्तेहाई खूबसूरती की वजह से "चान्द" से तश्बीह देकर आपको "चन्दा मियाँ" कहते थे और उस बेगुबार हकीकत में क्या शक कि हमेशा से आपका खानवाद-ए-आली हुस्न-व-जमाल में, तक्वा और तहारत में, बेनज़ीर रहा है और ये खूबियाँ आज भी इस घराने के एक एक फर्द में साफ दिखाई देती हैं। सच है कि "ई खाना हुमा आफताब अस्त" पूरा घर का घर आफताब-व-माहताब है।

हज-व-ज़ियारत और बारगाहे नबवी में हुजूरीः

आप 1356 हि० में हज काबा मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की जियारत से मुशर्रफ हुए। ये एक ऐसी नेमत है जिसके पाने की हर मोमिन के दिल की आरजू है और बड़ा ही मुकद्दर का धनी है वह मुसलमान जिसको ख्वाब में, सोते में ज़ियारत मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दौलत नसीब हो जाए। सोई किस्मत जाग उठे। ये दौलत हज़ार, बेशुमार नेमतों, फज़ीलतों से कहीं बढ़ कर है। रहमते नबवी ने मज़ीद और खास करम फरमाया कि बेदारी में जागते में दिन के उजाले में हुजूर मालिके कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार पाक हो और मज़ीद दर मज़ीद और रहमतों की बरसात हो जाए कि उस बारगाहे पाक में बार बार हाज़री और ज़ियारत की नेमत नसीब हो जाए तो अल्लाह की कसम उस लाजवाब, बेमिसाल किस्मत-व-फज़ीलत पर हर नेमत, हर दौलत कुर्बान! हर करामत, हर सआदत निसार।

ये नेमत कुबरा बहुत ही बलन्द किस्मत उलमा-ए-रब्बानीन, औलिया-ए-कबार को नसीब होती है। उन्ही कुद्दूसियों खुश नसीबों में हुजूर शैख, मुहक्किक, मुजद्दिद इमाम अब्दुल हक मुहद्दिस देहेलवी 1052 हि० और हुजूर कुतुबे सुब्हानी सैय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक बाँसवी 1136 हि० और हुजूर गौसे रब्बानी मौलाना सैय्यद मुहम्मद वारिस रसूल नुमा बनारसी 1166 हि० और हुजूर शैखुल औलिया ख्वाजा मुहम्मद इनायत हसन शाह 1360 हि० रहमतुल्लाह अलैहिम हैं। क्या इस करामत से बढ़ कर भी कोई करामत है? नहीं और हरगिज़ नहीं। हर करामत इस करामत के पाँव के नीचे है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा 1340 हि० कुदुस सिर्रहु ने अपनी किताब "मकालुल अरफा" में मिसाल के तौर पर ऐसे बहुत से

बलन्द किस्मत बुजुर्गों के नाम बताए हैं जिनको जागते में ज़ियारत, हुजूरी की दौलते पाक हासिल है, उन कुदसी बुजुर्गों के नाम मैंने अपनी किताब ''सनदुल औलिया'' में दर्ज कर दिए हैं।

सिलसिल-ए-शाज़लिय्या के इमाम-व-पेशवा हुजूर सैय्यदुना अबुल हसन शाज़ली 656 हि० रज़ी अल्लाह अन्हु तो ये फरमाते हैं कि ''आँख झपकने भर भी बहालते बेदारी रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीदार से महरुम नहीं हुआ हूँ अगर मआज़ अल्लाह ऐसा हो जाए तो हम लोग अपने को मुसलमान शुमार न करेंगे। ये वो आला तरीन मकाम है कि बस ये आयते मुबारका लिख कर आगे बढ़ जाओ। ''ज़ालिका फदलुल्लाहि यू तीहि मैंय्यशाऊ वल्लाहू जूल फदलिल अज़ीम।''

हाज़री मिर्ज़ा खे़ल शरीफः

मुरीद वही है जिसका अपने पीर-व-मुर्शिद से निस्बत, राब्ता खूब मज़बूत हो। पीर-व-मुर्शिद की बारगाह में हाज़री देता रहे। मतलब ये है कनेक्शन बहुत ही सही और दुरुस्त हो ताकि शैख का फैज़ मुरीद को बखूबी पहुँचता रहे। इसीलिए हुजूर शैखुल औलिया अपने दादा पीर हुजूर सैय्यदुना फखरुल आरफीन ख्वाजा सैय्यद मौलाना अब्दुल हई रज़ी अल्लाह अन्हु 1339 हि० के दरबारे नूरबार में चाटगाम मिर्ज़ा खे़ल शरीफ, बांग्लादेश दो मर्तबा हाज़िरी दी है। पहली बार 1329 हि० और दूसरी मर्तबा 1338 हि० में। उस दरबार आली का बड़ा ही अदब नवाज़ दस्तूर ये है कि मुरीदों को आम कयामगाहों में और सज्जादा नशीनान को आम मुरीदों से अलग इकामतगाहों में जो सज्जादा नशीनान की खास होती हैं ठहराया जाता है। इसलिए आपके साथ ऐसा ही मखसूस सुलूक बरता गया और हकीकत में ये सब फैज़ान है आपके पीर-व-मुर्शिद, बिरादरे बुजुर्ग हुजूर दादा मियाँ कुद्दुस सिर्रहु का।

किताबें:

आप बेशुमार खूबियों के साथ तबहूहर आलमे रब्बानी भी हैं आलमे रब्बानी ऐसी बरगज़ीदा हस्ती को कहते हैं जिनका अदब-व-एहतेराम, कुतुबे ज़माना करते हैं। आपने किताबें लिखकर भी सिलसिल-ए-अलिय्या की खूब खूब इशाअत की है। उन किताबों में आपकी एक किताब ''ऐजाज़े जहाँगीरी'' है जो अपने विषय पर निहायत ही मुफीद किताब है। सिलसिल-ए-अलिय्या, जहाँगीरिय्या, रज़ायिय्या, इनायतिय्या, राहतिय्या, फज़ाहतिय्या से वाबस्तगान को अपने पीर-व-मुर्शिद से मज़बूत राब्ता के

साथ मुन्दरजा ज़ैल किताबों का मुतालआ करना निहायत ज़रुरी है। (1) शरहुस्सुदूर (2) सीरते फखरुल आरफीन शरीफ (3) सीरते जहाँगीरी (4) यादगारे जहाँगीरी। ये तमाम किताबें अपनी जगह मुसल्लम मगर हुजूर गौसे पाक की किताब "फतूहुल गैब शरीफ" हुजूर इमाम कुशैरी का रिसाला कुशैरिया, सिलसिल-ए-सुहरवर्दिया के इमाम हुजूर शैखुश्शुयूख ख्वाजा शहाबुद्दीन सुहरवर्दी की किताब अवारतुल मआरिफ को अपने पीर-व-मुर्शिद से पढ़ना निहायत ही ज़रुरी है। सूफियों को, पीरों को सुलूक-व-तसव्वुफ के मसाएल से वाकिफ होना बेहद लाज़िम है।

सज्जादा नशीनः

आपके सज्जादा नशीन हुजूर सनदुस्सालेकीन ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह रहमुल्लाह अलैह हैं जो आपके इकलौते फरज़न्द अरजुमन्द हैं। मुरीद भी हैं और खलीफ-ए-आज़म भी।

मुरीदीन और खुलफ-ए-इज़ामः

मुरीदीन तो बहुत हैं और हर मुरीद इनायती रंग से रंगीन, सब दरिया-ए-इनायती से सैराब। खुलफा की तादाद बज़ाहिर तो कम मगर अहम और बहुत ही अहम है। हर खलीफा अपनी जगह रुश्द-व-हिदायत का आफताब-व-माहताब है। अपने पीर-व-मुर्शिद का हर तरह से वफादार, जाँनिसार। हर खलीफा की हमा वक्त यही धुन यही लगन कि हमारे पीर-व-मुर्शिद का सिलसिल-ए-पाक खूब फैले खूब फले, फूले, हमेशा आबाद, शाद रहे। यहाँ इख्तेसारन कुछ मुंतखिब खुलफा-ए-कबार के नाम दर्ज किए जा रहे हैं।

(1) ख्वाजा सूफी मुहम्मद हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह 1959 ई०, भैंसोड़ी शरीफ। (2) हज़रत सूफी मुहम्मद सिद्दीक हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह, मुरादाबाद। (3) हज़रत सूफी बशीरुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह लखनऊ। (4) हज़रत सूफी वकील याकूब अली शाह रहमतुल्लाह अलैह लखनऊ।

अहलिया मुबारकाः

आप दरगाह इनायती ही के अहाता में दफन हैं। नूरुल्लाह मरकदहा। अल्लाह आपकी कब्र को खूब खूब रौशन फरमाए आमीन! आप अपने शौहर मोहतरम हुजूर शैखुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह कुद्दुस सिर्रहु की बहुत ही कामयाब मुरीदा हैं। बीवी का

अपने शौहर से मुरीद होना ये एक बहुत बड़ी बात है। बीवी अपने शौहर की बहुत बड़ी राज़दाँ होती है, शौहर का कोई ऐब-व-हुनर बीवी से छिपा नहीं रहता। वह एक एक नोक पलक, एक एक रग से वाकिफ होती है। ऐसी सूरत में बीवी का अपने शौहर से खुशी खुशी मुरीद होना इस बात की बहुत ही मज़बूत और बड़ी दलील है कि बीवी ने अपने शौहर की ज़िन्दगी को निहायत ही बेदाग, साफ सुथरी और शफ्फाफ पाया और पीर के लायक जाना।

बस्ती के लोग अपनी बस्ती ही के पीर से मुरीद हो जाएँ बस ये फज़्ले रब्बानी और अल्ताफे नबवी है। बस्ती के लोग रात दिन अपनी आँखों से पीर का चलना फिरना देख रहे हैं। उठना बैठना देख रहे हैं। लोगों से मिलना, जुलना देख रहे हैं। लेन, देन देख रहे हैं और लेन देन कर भी रहे हैं। एक एक गोशा पर नज़र रख रहे हैं। और बस्ती के लोग नासमझ और अनपढ़ भी नहीं हैं। निहायत ही मुहज़्ज़ब और बाशऊर हैं। खरे खोटे की तमीज़, अच्छे, बुरे की पहचान रखते हैं। अब बस्ती के लोग अपनी बस्ती ही के पीर से जोक दर जोक, पूरे ज़ौक-व-शौक और अकीदत के साथ खुशी खुशी मुरीद हो रहे हैं। ये एक ऐसी यकीनी दलील है जो किसी के काटे कट नहीं सकती कि बस्ती के लोगों ने अपनी बस्ती के पीर को पीर के लायक जाना। ये खूबी इस घराना की खास पहचान और निराली शान है। रब्बे अज़ीम अपने हबीबे करीम अलैहित्तहय्यतू वत्तस्लीम के सदके इस नूरानी घराने को हमेशा आसेबे रोज़गार से, हासिदों के हसद से बचाए रखे। इसकी आब-व-ताब कायम-व-दायम रखे। आमीन!

सिलसिल-ए-बयान ये है कि हुजूर शैखुल औलिया कुद्दुस सिर्रहु की अहलिया मुबारका निहायत ही नेक, पारसा, आरेफा खातून थीं। घरेलू नीज़ उर्स के इन्तेज़ामी उमूर में मुरीदीन की देख रेख में बहुत ही कामयाब मुन्तज़िमा थीं। दर हकीकत सच्ची बीवी वही है जो अपने शौहर के हर दुख सुख में, तमाम कामों में साथ साथ रहे। इसीलिए बीवी को रफीक-ए-हयात कहते हैं, ज़िन्दगी की साथी।

विसाल शरीफः

बउम्र अट्ठांवन साल 4 शव्वालुल मुकर्रम 1360 हि० मुताबिक 26 अक्तूबर 1941 ई० बरोज़ यकशन्बा बमकाम भैंसोड़ी शरीफ ज़िला रामपुर (यू०पी०) हर साल 2,3,4,5 शव्वालुल मुकर्रम बमकाम भैंसोड़ी शरीफ निहायत नूर

बरसती फिज़ा में उर्स सरापा कुद्स होता है।

नमाज़े जनाज़ाः

आपकी वसियत के मुताबिक आपकी नमाज़े जनाज़ा सदरुल अफाज़िल अल्लामा नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी कुद्दुस सिर्रहु ने पढ़ाई जो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह के बहुत ही बलन्द पाया खलीफा और शागिर्द हैं।



हुज़ूर सनदुस्सालेकीन

ख्वाजा **मुहम्मद राहत हसन शाह** रहमतुल्लाह अलैह

हुज़ूर सनदुस्सालेकीन ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह कुद्दुस सिर्रहु

नाम, नसब, लकब, उर्फियतः

नाम अकदस "मुहम्मद राहत हसन" वालिद बुजुर्गवार "हुज़ूर शैखुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह" हैं। इस खानवाद-ए-आली के मोरिसे आला हज़रत अब्दुल्लाह खाँ अफगानी रहमतुल्लाह अलैह हैं जिन्होंने मुल्क अफगानिस्तान के कस्बा "शैख जानाँ" ज़िला पेशावर से तर्क वतन करके कस्बा भैंसोड़ी ज़िला रामपुर (यू०पी०) को अपना मुस्तकिल वतन बना लिया। जो आज तक नस्ल बाद नस्ल इस कबीला का वतन मालूम है। ये अज़ीमुल बरकत कबीला हमेशा से बहुत ही पाक, साफ, शफ्फाफ रहा है।

खूबसूरती, नेक सीरती, ईमानदारी, सच्चाई, वज़ादारी, दरियादिली, कमज़ोरों की दिलजोई, बहादुरी, शरीअते पाक की पासदारी इस घराने की असल पहचान है। इस खानवादा में ऊपर ही से पीरी, मुरीदी का सिलसिला रहा है। इस अज़ीमुश्शान खानदान के सब ही बुजुर्गाने केराम साहबे विलायत-व-करामत गुज़रे हैं। आपके दादा बुजुर्गवार हज़रत मौलाना मुहम्मद हसन रज़ा रहमतुल्लाह अलैह हज़रत आशिक मियाँ रामपूरी कुद्दुस सिर्रहु के मुरीद-व-खलीफा हैं और आपकी अहलिया मुकर्रमा रहमतुल्लाह अलैहा हज़रत सैय्यद मुहम्मद मुश्ताक मियाँ रामपूरी कुद्दुस सिर्रहु की मुरीदा हैं। जिनकी तारीखे वफात 26 जमादुल आखिर 1345 हि० उम्र शरीफ अस्सी साल थी। आखरी आरामगाह "भैंसोड़ी शरीफ" के कब्रस्तान में है। हज़रत मौलाना हसन रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे गेरामी हज़रत अलिफ खाँ कुद्दुस सिर्रहु हज़रत नवाज़ खाँ रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद-व-खलीफा हैं। आपका मज़ार मौज़ा गोगई, मीरगंज ज़िला बरेली शरीफ है। हुज़ूर शैखुल औलिया ख्वाजा मुहम्मद इनायत हसन शाह और हुज़ूर दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैहुमा के दादा बुजुर्गवार हज़रत अलिफ खाँ के बहुत से मुरीदीन हैं। बहुत ही खास मुरीदान के नाम ये हैं।

(1) सैय्यद करामत अली शाह नगरिया सादात (2) वारिस अली शाह भैंसोड़ी शरीफ।

कुछ देखा आपने:

वालिद भी, वालिदा भी, दादा भी, दादी भी, परदादा भी, परदादी भी यहाँ से वहाँ तक विलायत का एक सिलसिलए-ए-मुसलसल है। नूर की कड़ियाँ, नूर की ज़ंजीरें हैं जो एक दूसरे से वाबस्ता, पैवस्ता हैं। ऐसे पाक गहवार-ए-विलायत व करामत में जो पैदा होगा वह सनदुस् सालेकीन होगा। अब्दाले ज़माना और मुस्तजाबुद्दावात होगा। जिनको हक शनास अहले दिल बड़ी अकीदत-व-मुहब्बत से "राहत पाक" की उर्फियत से याद करेंगे।

सनदुस्सालेकीन:

आपका बहुत ही मशहूर लकब "सनदुस्सालेकीन" है "सुलूक" एक खालिस अ़रबी लफ्ज़ है। जिसका मानी लुगत और इस्तेलाहात की रौशनी में ये है "ऐसी राह पर निहायत ही होश-व-हवास के साथ, करीना और उसूल से, पीर-व-मुर्शिद के साथ साथ चलना जो मंज़िले मकसूद इरफाने हक तक पहुँचा दे।" इसी राह को "तरीकृत" कहते हैं। तरीकृत का मानी "रास्ता" है मगर इस रास्ते पर शरीअते मुस्तफवी की शमा ज़रुर रौशन हो। वर्ना ये अल्लाह वालों की तरीकृत हरगिज़ न होगी बल्कि ये शैतानी राह होगी। वही तरीकृत मकबूल, महबूब और अल्लाह तक पहुँचाने वाली है जिसको शरीअत पाक की ताईद और पुश्त पनाही हासिल है। पूरा सुलूक-व-तसव्वुफ, हकीकत-व-मआरफत हुजूर सैय्यदुना व सैय्यदुल कुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशनूदी, इत्तेबा और मुहब्बत ही में है। शरीअते मुतह्हरा एक रौशन कानून है। साफ हुक्म है, इस हुक्म-व-कानून पर सही तरीके से चलना तरीकृत है। इसीलिए हुजुर कुतुबुल आरफीन ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह दादा मियाँ रज़ी अल्लाह अन्हु ने बड़ी सच्चाई और सफाई के साथ ऐलान हक फरमा दिया कि जो शरीअते पाक से हटा वह मुझसे कटा। ऐसे शख्स से मेरा और मेरे पीराने इज़ाम कुदुस्त इसरारहुम का कोई ताल्लुक, कोई लगाव नहीं। सच है हर नेमत दामने मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ही से वाबस्ता है। "सनद" ये भी एक अरबी ही लफ्ज़ है जिसका मानी है "भरोसा, ऐतमाद, पुश्त पनाह, दार-व-मदार" वगैरा। सनद का लफ्ज़ उसूले हदीस की इस्तेलाह

में बहुत ही मुस्तअमिल है, सनद ही पर हदीस की असल का दार-व-मदार है। जैसी "सनद" वैसी "असल" अब पढ़ो सनदुस्सालेकीन का तर्जुमा हज़रत राहत हसन मियाँ पर सालिकों का दार-व-मदार है। आप सालिकों की सनद हैं, जिसको सुलूक की सनद दे दें वह "सालिक" है। आप "सालिक" ही नहीं हैं बल्कि सालिक गर हैं। सालिक बनाने वाले हैं।

इंसान नुमा हैवानों को इंसान बनाना। फिर उनको इरफाने हक की फैक्ट्री में डाल कर अल्लाह वाला बनाना यही है आपका सुलूक-व-तसव्वुफ और यही है सिलसिल-ए-अलिय्या जहाँगीरिया की खिदमत-व-इशाअत का अव्वलीन मकसद।

सय्याही और सिलसिला की इशाअतः

अच्छे काम के लिए सय्याही करना, गश्त करना अल्लाह वालों की पुरानी रीत और विरासत रही है। हज़रत राहत हसन मियाँ ने भी इशाअत सिलसिला की खातिर बेपनाह, दुश्वार गुज़ार, दूर दराज़ जान जोखिम जगहों के सफर किए हैं। उन शहरों, कस्बों, जंगलों वीरानों का सफर किया है जहाँ गैर मुस्लिमों, बदमज़हबों का गढ़ था। लेकिन उन बंजर और बाँझ ज़मीनों में उस मर्दे कामिल ने सुलूक-व-एहसान, तसव्वुफ-ए-इरफान के ऐसे सदाबहार, महकते, तरो ताज़ा फूल खिलाए हैं कि जिनकी ईमानी इरफानी खुश्बू हर सू फैल गई। गैर मुस्लिम ईमान लाए। बदमज़हब, बदअकीदा कामिलुल ईमान और सहीउल अक़ीदा हो गए।

सुन्नते नबवी की इत्तेबा में तब्लीगे इस्लाम के लिए हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के बाहर मुल्कों के बादशाहों को वज़ीरों को रऊसाए मुमलिकत को बहुत ज़्यादा खुतूत लिखे हैं।

आपका सहीफ-ए-ज़िन्दगीः

आपकी किताबे ज़िन्दगी का हर वरक बड़ा ही बेदाग और रौशन है। वरक़, वरक़ से ईमान-व-नूर का उजाला फूट रहा है। आपकी पूरी ज़िन्दगी को मुख्तसर से मुख्तसर लफ्ज़ में बयान करना हो तो बस इतना लिख दो कि हर दुनियावी चमक, दमक से कट कर अल्लाह ही के हो जाना। यही तलब, यही तड़प, यही जुस्तुजू, यही आरज़ू मुरीदों में पैदा करना आपके "सहीफ-ए-ज़िन्दगी" का खास मकसद है और आपके सुलूक-व-एहसान का हासिल है, हदीसे अक़्दस में तसव्वुफ का नाम

"एहसान" है।

"एहसान" का मानी है, हसीन बनाना। खूबसूरत बनाना इबादत को हसीन बनाने का मतलब क्या है? हदीस पाक से पूछो इरशाद नबवी है कि "इबादत" को खूबसूरत बनाओ। यानी इबादत इस तरह करो कि गोया तुम अल्लाह को देख रहे हो और अगर ये गुमाँ न पैदा कर सको तो ये यकीन तो ज़रुर रखो कि अल्लाह तुम को देख रहा है। इसी हदीस एहसान का तर्जुमा हुजूर गौसुस्सकलैन रज़ी अल्लाह अन्हु "फतूहुल गैब शरीफ" में फरमाते हैं कि "कुन मअल्लाहि बिला खलक" अल्लाह के साथ रहो तो कोई भी मखलूक साथ न लगी हो। "कुन मअलखल्कि बिला नफ्स" मखलूक के साथ रहो तो नफ्स शामिल न हो। ये इरशाद अकदस तसव्वुफ की जान है और इसी खूबी को पैदा करना मुर्शिदे कामिल का काम है" फतूहुल गैब शरीफ में कुरआनी और हदीसी तसव्वुफ-व-एहसान का बयान है। फतूहुल गैब के कई तर्जुमे छप चुके हैं मगर सबसे मोहतात और बेहतरीन तर्जुमा हुजूर शैखुल इस्लाम अल्लामा हकीम सैय्यद सिकन्दर शाह जहाँगीरी रहमतुल्लाह अलैह का है 1378 हि०/1959 ई० जो हुजूर दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह के बहुत ही महबूब पीर भाई हैं। आप ही ने "सीरते फखरुल आरफीन शरीफ" लिखकर पूरे जहाँगीरियों पर वह एहसान-व-करम फरमाया है कि जिसका जवाब नहीं आपके बहुत ज़्यादा खुलफा और मुरीदीन हैं। आपके बेशुमार मुरीदीन बनारस में थे जो वफात पा गए। कई एक आज भी बहयात हैं।

अब्दाले ज़माना और मुस्तजाबुद्दावात हैं:

"मुस्तजाबुद्दावात" का मानी है कि जिसकी ज़बान से निकली हुई दुआ बारगाहे इलाही में बहुत जल्द कुबूल हो जाती है। सफे औलिया में बहुत ही ऊँचे मर्तबा, सरापा खैर-व-बरकत, मुस्तजाबुद्दावात बुजुर्गों को "अब्दाल" कहते हैं। हदीसों में अब्दाल के बकसरत फज़ाएल-व-मरातिब बयान किए गए हैं। यहाँ सिर्फ चन्द खुसूसियात ज़िक्र किए जा रहे हैं।

(1) मुस्तजाबुद्दावात होते हैं। (2) बहुत ही सखी, ज़िन्दा दिल होते हैं। (3) सब का भला चाहते हैं। (4) दिल और ज़बान एक होती है। (5) उन की बरकत से बलाएँ टलती हैं। (6) उनके वसीला से बारिश होती है। (7) उनसे ज़मीन का निज़ाम कायम है। (8) उनका सीना कीनों से पाक होता है।

इन खुसूसियात की रौशनी में हज़रत राहत हसन मियाँ की साफ,

शफ्फाफ, सुथरी, निखरी सीरत का मुतालेआ करने के बाद हकीकत शनास अहले दिल ने साफ ऐलान कर दिया और ये ऐलान हर तरफ फैल गया कि हज़रत राहत पाक अब्दाले ज़माना और मुस्तजाबुद्दावात बुज़ुर्ग हैं। आपने अपनी ज़बान से जो फरमा दिया वह होकर रहा।

अहलिया मुबारकाः

आप ही की दरगाह आली के नज़दीक मदफून हैं 1995 ई० वफात है, आप निहायत पाकबाज़, वलिया, आरेफा। उर्स और तमाम उमूर में बहुत ही सलीका शिआर मुन्तज़मा। मुरीदीन की देख भाल में बेहद फराख दिल और कूशाँ मुरीदीन की दिलजूई, मुहब्बत, दुख, दर्द में खैरगीरी। हर मुमकिन तौर पर मदद करना इस घराने की पुरानी रीत रही है और ये विरासत रिवायत आज भी कायम है। दुआ है कि इसी तरह हमेशा कायम रहे। आमीन!

साहबज़ादगानः

साहबज़ादगान तीन हैं (1) सबसे बड़े साहबज़ादा हुजूर सैय्यदी मुर्शिदी आकाए नेमत मखदूमुल मशाएख महबूब मुस्तफा सनदुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद फसाहत हसन शाह राहती कुद्दुस सिर्रहु हैं। (2) मखदूम गेरामी किब्ला मिस्बाह हसन मियाँ। (3) मखदूम गेरामी किब्ला फरहत हसन मियाँ।

साहबज़ादियाँः

साहबज़ादियाँ दो हैं।

(1) मखदूमा नईमा खातून (2) मखदूमा फहीमा खातून।

सज्जादा नशीनः

आपके सबसे बड़े साहबज़ादा हुजूर सनदुल औलिया कुद्दुस सिर्रहु हैं।

मुरीदीन, खलीफाः

मुरीदीन और खुलफा की तादाद तो कम मगर अहम और बहुत अहम। सब इश्क-व-मस्ती में सरशार, सब राहती रंग में सदाबहार। सब सुलूक-व-तसव्वुफ से बाफैज़, बामुराद, सब राहती फैक्ट्री के शाहकार, सब पर पीर-व-मुर्शिद की छाप, सूफियों की भीड़ में आसानी से पहचान लिए जाएँ कि ये हैं राहती गौहर सादात।

तारीखे विलादत, तारीखे वफातः

तारीखे विलादत 26 मुहर्रमुल हराम 1343 हि० मुताबिक 28 अगस्त और तारीख वफात 4 ज़ीकादा 1395 हि० मुताबिक 9 नवम्बर 1975 ई० बरोज़ इतवार बमकाम भैंसोड़ी शरीफ है।

नमाज़े जनाज़ाः

आप ही के ख़ानदाने आली के मुकतदर, बुजुर्ग, भैंसोड़ी शरीफ की जामा मस्जिद के पेशे इमाम मौलाना नूरुल हसन साहब उर्फ दद्दा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह ने जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई।

उर्से मुकद्दसः

हर साल 2,3,4,5 ज़ीकादा को बमकाम भैंसोड़ी शरीफ बहुत ही ईमानी, रुहानी फिज़ा में उर्से मुबारक होता है।



हुजूर सनदुल औलिया

ख्वाजा अल्हाज **मुहम्मद फसाहत हसन शाह** रहमतुल्लाह अलैह

हुज़ूर सनदुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद फसाहत हसन शाह कुद्दुस सिर्रहु

नाम, अल्काब, उर्फियतः

नामे पाक "मुहम्मद फसाहत हसन" अल्काबे मुबारका "मख़दूमुल मशाएख़, महबूबे मुस्तफा, सनदुल औलिया" उर्फियत "मियाँ हुज़ूर"।

तारीखे पैदाइशः

29 ज़िलहिज्जा 1374 हि० मुताबिक 19 अगस्त 1955 ई० बरोज़ जुमा बमुक़ाम भैंसोड़ी शरीफ।

रस्मे बिस्मिल्लाह ख्वानीः

बउम्र चार साल चार माह 1378 हि० बदस्त वालिदे मखदूम राहत पाक अलैहिर्रहमा।

तारीखे बैअतः

बउम्र सोलह, पहली शाबानुल मुअज़्ज़म 1391 हि० मुताबिक 1971 ई० बाद नमाज़ जुमा बदरगाह इनायती भैंसोड़ी शरीफ।

तारीखे सज्जादा नशीनीः

3 जमादुल आखिर 1395 हि० मुताबिक 17 जून 1975 ई० बरोज़ सनीचर बाद नमाज़ जुहर बदरगाह हुज़ूर दादा मियाँ कुद्दुस सिर्रहु (लखनऊ)।

तारीखे शादीः

30 मई 1982 ई० बरोज़ इतवार, मुहल्ला शैखूपुरा कस्बा बहेड़ी शाह गढ़ ज़िला बरेली शरीफ आपकी ससुराल है। आपका ससुराली खानदान हमेशा से अफगानी नस्ल, निहायत ही करीमुन्नसब, शरीफुल हसब, सरापा तकवा, तहारत, सुन्नी सहीउल अकीदा है। पीरी, मुरीदी का ताल्लुक सिलसिल-ए-रज़ायिय्या, इनायतिय्या से है सिर्फ यही नहीं बल्कि शुरु ही से शादी, ब्याह का ताल्लुक रिश्ता हुज़ूर शहंशाह ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह उर्फ दादा मियाँ और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रज़ी अल्लाह अन्हु के पाक साफ खानवादे में रहा है और आज भी शादी

ब्याह का ये मुबारक सिलसिला कायम और जारी है। ये दोनों खानवादे नस्ल की हिफाज़त का बहुत ही ख्याल रखते हैं और ये निहायत ही अच्छा तरीका है। किस्स-ए-मुख्तसर ये कि ''हुजूर सनदुल औलिया'' का आबाई नानहाली ससुराली हर खानवादा शुरु ही से बहुत ही पाक साफ शफ्फाफ रहा है और आज भी है। ये सब इनामाते इलाही हैं, अल्ताफे नबवी हैं। ''ज़ालिका फदलिल्लाहि व रसूलिहि सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम''।

तारीखे हज-व-ज़ियारत मअ अहलिया मुबारका:

9 ज़िल हिज्जा 1417 हि० मुताबिक 17 अप्रैल 1997 ई० बरोज़ जुमेरात।

कुरआन करीम और रहमतों की बारिश:

आप अपने वालिद मखदूम हुजूर सनदुस्सालेकीन ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह कुद्दुस सिर्रहु के बड़े साहबज़ादा भी मुरीद और खलीफ-ए-आज़म और सज्जादा नशीन भी। कुरआन मजीद की आयत मुबारका ''वकान अबूहुमा सालिहन'' से निहायत ही साफ, शफ्फाफ ये रौशनी मिलती है कि ऊपर की पुश्तों में किसी पुश्त में भी कोई बुजुर्ग गुज़रे हैं तो उनकी नेकी का फैज़ नीची वाली नस्ल को बखूबी पहुँचता है। नीज़ ऊपर के पीराने इज़ाम अपने ज़ेरे दामन मुरीदों को मीरासे मुस्तफवी से खूब खूब नवाज़ते हैं। इसलिए ये एक बेगुबार और यकीनी हकीकत है कि हुजुर सनदुल औलिया अपने आबाई, नीज़ रज़ाई, इनायती, राहती, चार पीर, चौदह खानवादे, तमाम पीराने सलासिल की सब निस्बतों के अनवार-व-बरकात, मआरिफ-व- मुहासिन से बेहद मालामाल हैं। फिर आपकी इबादत, रियाज़त, तकवा, तहारत, हुस्ने सीरत, मुजाहिदे, मुराकबे, शरीअत-व-तरीकत की जामेअत, पासदारी की मज़ीद दर मज़ीद खूबियों ने जवाहर-व-कमालात पैदा कर दिए हैं। आपकी पाक, साफ, बेदाग ज़िन्दगी का मकसूद असली हुजूर मालिके कौनैन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और खुशनूदी है और उसी राह से रब्बे करीम जल्ला शानहु की रज़ा और इरफान मतलूब है। उसी नूर के साँचे में आपकी करामत मआब सहीफ-ए-ज़िन्दगी की अदा अदा, गोशा गोशा ढ़ला है।

आपका रहमती नाम ''मुहम्मद फसाहत हसन'' है कितना प्यारा और महबूब नाम है ''मुहम्मद फसाहत हसन'' अल्लाह अल्लाह हुजूर

सैय्यदुना आली मुक़ाम इमाम हसन मुज्तबा अलैहिस्सलाम की फसाहत हुज़ूर सैय्यदुना आली मुक़ाम इमाम हसन फातेह कर्बला अलैहिस्सलाम की फसाहत "फसाहत" की थी। हर तरह से साफ सुथरा, हसनी, हुसैनी ऐसी कवी, ज़ूदे असर, रुह आफरीं, ईमान परवर, नूर बरसाती निस्बत है कि जिसका बदल नहीं। इसी बाबे करम से हर नेमत तक्सीम होती है। इमामैन करीमैन अलैहिमुस्सलाम ने अपने महबूब के ऐसे प्यारे, अनोखे अन्दाज़ से अपनी रहमती गोद में लेकर ऐसा अब्रे बाराँ बना दिया कि थमता ही नहीं। ऐसा सैले रवाँ है कि रुकता ही नहीं। ऐसा दरियाए करम बहा दिया है कि मआरेफत, हकीकत, सुलूक-व-एहसान के प्यासे इस फसाहती दरियाए नेमत से खूब जी भर कर सैराब हो रहे हैं। इस बारगाह में महरुमी नाम की कोई चीज़ ही नहीं। करम ही करम है नेमत ही नेमत है। जिनको कुदरत ने पहचान बख्शी है बयक ज़बान बोल उठे कि "सनदुल औलिया" ने ज़र्रों को कहकशाँ, तवल्लदों को पारस बना दिया। हक है कि अल्लाह जल्ला शानहु ने आपको इल्म लज़्ज़ती, फरासते ईमानी अता फरमा कर विलायत का वह रुत्बा बख्शा है कि सबकी ज़बान पर बस यही रवाँ है कि "आप सनदुल औलिया" हैं, वली भी और वलियों की सनद भी। ये है फज़्ले रब्बानी, ये है अताए नबवी। "सनद" की मुख्तसर लगवी तशरीह हुज़ूर सनदुस्सालेकीन के ज़िक्र अकदस में गुज़र चुकी है।

हुज़ूर सनदुल औलिया के दामने फैज़ में चार पीर, चौदह खानवादे में सलासिल तसव्वुफ की तमाम नूरानी निस्बतें जमा हो गई हैं। कादरियत और चिश्तियत भी, सोहरवरदियत और फिरदौसियत भी, नक्शबन्दियत और अबुल उलायियत भी। जहाँगीरियत और रज़ायियत भी, इनायतियत और राहतियत भी। आप जामा हैं हर सिलसिल-ए-तसव्वुफ के इसी लिए राकिमुस्सुतूर अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फसाहती सिर्फ उस दरे करीम को पूरी मज़बूती के साथ पकड़ कर, मुतमइन हो गया है। उस दर की फकीरी में सब फकीरी है। पैवन्द कारी से महफूज़ हों। यक दर गीर रा मुहक्कम गीर, एक मज़बूत दर को मज़बूती से थाम लो। आफियत और खैरियत इसी में है। ये क्या है कि यहाँ से भी ले लें और वहाँ से भी ले लें। जब दामन फसाहती में कोई कमी नहीं तो इधर-उधर क्यों झाँके तार्कें।

हर नेमत अपने पीर सेः

कोई नेमत किसी भी बारगाह से मिले दर हकीकत वह अपने पीर ही का फैज़ है। इसीलिए पीर को "आका-ए-नेमत" कहते हैं इसी हकीकत को बड़ी वज़ाहत के साथ हुजूर इमाम मुजद्दिद शैख मुहक्किक अब्दुल हक मुहद्दिस देहेलवी कुद्दुस सिर्रहु ने अपनी किताब "अखबारुल अखयार" शरीफ में बयान फरमाया है।

हुजूर सनदुल औलिया का उन्फुवाने शबाबः

आपकी उम्र मुबारक का बीसवाँ साल था कि आपके रौशन अकदस पर "सज्जादा नशीनी" सिलसिल-ए-अलिय्या की तब्लीग-व-इशाअत का भारी बोझ बुजुर्गों की जानिब से रख दिया गया। आपने इस अमानत विरासत की पूरी पासबानी करते हुए इस सिलसिल-ए-पाक को वह फरोग बख्शा कि इस राह के तजुर्बाकार, पुख्ताकार, बुजुर्गवार दाँतों तले उंगली दबा कर बोल पड़े कि अल्लाह रे तेरी कुदरत कि इतना कम वक्त और इतने बड़े-बड़े काम निहायत ही खुश अस्लूबी से अंजाम दे दिया। मुल्क और बैरुने मुल्क का एक भारी भीड़, खुलफा की भी अच्छी खासी तादाद, मस्जिदों, मदरसों, खानकाहों की भी तामीरे मुसल्सल।

महबूबे मुस्तफाः

एक लकब आपका "महबूबे मुस्तफा" भी है। यानी हुजूर मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के प्यारे, दुलारे। बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ की मुत्तफिक अलैह हदीसे पाक है जिसका बेलाग साफ शफ्फाफ तर्जुमा ये है "तुम लोगों में कोई एक भी मोमिन नहीं जब तक मैं उसको उसके बाप से, माँ से, आल-औलाद से, इकट्ठा तमाम लोगों से महबूब हो जाऊँ" "अहदुकुम" और "अजमईन" दोनों अल्फाज़ पर भरपूर ध्यान दो। इस हदीसे अकदस के पहले मुखातिब हज़रात सहाब-ए-अखयार रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन हैं।

अव्वल खिताब सैय्यदुना सिद्दीके अकबर से है, सैय्यदुना फारुके आज़म से है, सैय्यदुना उस्माने गनी जुन्नूरैन से है, सैय्यदुना मौलाए काएनात अली मुर्तज़ा से है, हर सहाबी से है रज़ी अल्लाह अन्हुम। फिर दर्जा-ब-दर्जा कयामत तक तमाम मोमिनीन, मोमिनात से है और इस कठिन कसौटी पर तमाम सहाब-ए-केराम, उलमाए रब्बानीन, औलियाए इज़ाम खरे और सही उतरे हैं। यही हदीस ईमान वह महवरे नूर है जिस

पर "हुज़ूर सनदुल औलिया" की पूरी ज़िन्दगी आखिरी साँस तक गर्दिश करती रही है। जिस इनाम में हुज़ूर रहमते कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने अपने मखसूस खज़ान-ए-रहमत से महबूबियत की बेमिसाल नेमत अता फरमा कर अपना महबूब बना लिया और हक शनास अकीदत मंदों की ज़बान-व-कलम से कहलवा और लिखवा दिया।

महबूबे मुस्तफा हुब्बे नबवी आपकी किताब ज़िन्दगी का सबसे रौशन दीबाचा है और इसी नूर-व-मुहब्बत के साँचे में बंदगाने ख़ुदा को ढ़ालना आपकी पीरी, मुरीदी का हासिल है और इस अज़ीम मकसद में अल्लाह जल्ला शानहु ने आपको खूब खूब कामयाबी अता फरमाई है।

मखदूमुल मशाएखः

ये भी आपका लकब है। आप के अल्काब तीन हैं।

(1) सनदुल औलिया (2) महबूबे मुस्तफा (3) मख़दूमुल मशाएख़।

मख़दूमुल मशाएख़ का तर्जुमा है कि जिनकी ख़िदमत मशाएख़े ज़माना करें। हदीस शरीफ है जिसका तर्जुमा ये है कि ख़िदमत से अज़मत, सरदारगी, बरतरी मिलती है। हुजुर मखदूमुल मशाएख ने हज़रात मशाएख़े इज़ाम की ऐसी मकबूल ख़िदमत की है कि उस सिला में रब्बे करीम जल्ला शानहु ने आपको "मख़दूमुल मशाएख़" बना दिया। मख़दूमुल मशाएख़ हज़रात औलिया-ए-कबार में निहायत ही ऊँचा मर्तबा है। सनदुल औलिया, महबूबे मुस्तफा, मख़दूमुल मशाएख़ ये तीनों अल्काबे आलिया आपकी ज़ात मुबारका के ऐसे अटूट अल्काब है कि ये तीनों एक साथ या अलग-अलग बोले या लिखे जाते हैं तो सिर्फ आप ही मुराद होते हैं। किसी ने कहा या लिखा "सनदुल औलिया तो आप ही मुराद हैं।" किसी ने कहा और लिखा "महबूबे मुस्तफा तो बस आप ही मुराद हैं।" किसी ने कहा या लिखा "मख़दूमुल मशाएख़ तो सिर्फ आप ही मुराद हैं।" ये इनाम इलाही ये है फज़्ले नबवी।

दस्तखत और निस्बते अबू तुराबीः

तसव्वुफ का एक नाम फकीरी, फरोतनी, खाकसारी और फना-ए-नफ्स है। यानी "नफ्से अम्मारा" को जड़ से उखाड़ कर ऐसा फेंक दो कि नफ्सानियत का वजूद ही न हो। हुजुर सैय्यदुना (मौलल मुस्लिमीन) मुश्क़िल कुशा अली मुर्तज़ा करमल्लाहू वजहहु की एक बहुत ही महबूब कुन्नियत "अबू तुराब" है जो हुज़ूर सैय्यदुना व सैय्यदुल कुल सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की अता करदा है। "अबू तुराब" का

तर्जुमा ये है "मिट्टी के बाप" आप तमाम खाकियों तुराबियों, सूफियों के बाप और मुर्शिदे अकबर हैं। मुफस्सिरे आज़म हदीसे वक्फा और तसव्वुफ के मुसल्लमुस्सबूत इमाम हज़रत काज़ी सनाउल्लाह पानीपती रहमतुल्ला अलैह 1225 हि० अपनी बेनज़ीर किताब तफ्सीरे मज़हरी स० 199 जि० 4 में लिखते हैं कि "अली अबुस्सूफिया अजमईन" अली इकट्ठा तमाम सूफियों के बाप हैं। आपका नाम पाक ही "अली" है जिसका मानी है बहुत बलन्द, बेहद बलन्द। ज़ात में बलन्द, हसब में बलन्द, नसब में बलन्द, इंसानियत कुबरा में बलन्द, वल्दियत उज़्मा में बलन्द। हर लिहाज़ और हर तरह से बलन्द जिनको आपसे निस्बत हो गई वह बलन्द। आपका सिलसिल-ए- मुबारका बलन्द। तफ्सीरे मज़हरी स० 38 जि० 5 में है कि हम सब लोग "सूफिया" को सूफिया अलैह कहते हैं कि दर्जा और मर्तबा के लिहाज़ से बहुत बलन्द हैं। इसलिए कि उनको अली से निस्बत और सनद है और अली कुतुबे विलायत हैं। यही वजह है कि उलमाए रब्बानीन आपके सिलसिल-ए-पाक को "अलिय्या" और उस "सिलसिल-ए-अलिय्या" से वाबस्ता सूफिया को "सूफिया अलैह" बोलते लिखते चले आ रहे हैं। हुजूर सैय्यदुना इमाम शैख मुहक्किक अब्दुल हक मुहद्दिस देहेलवी 1052 हि० कुद्दुस सिर्रहु तो अलिय्या ही लिखते हैं। लेखक अपने बुजुर्गों, इमामों की इत्तेबा में "अलिय्या" ही बोलता और लिखता है। यानी अली का सिलसिला करमल्लाहू वजहहु अलैहिस्सलाम।

ये कैसा और कितना बड़ा अंधेर है कि हुजूर गौसे पाक की निस्बत से "कादरिया" हुजूर ख्वाजा गरीब नवाज़ की निस्बत से "चिश्तिया" और इसी तरह तमाम सिलसिले और जो हर गौस-व-ख्वाजा के बाप हैं, तमाम सूफियों के बाप हैं जिन से तसव्वुफ के सब सिलसिले निकले हैं, उनके नाम से कोई सिलसिला नहीं। हैरत है, ताज्जुब है।

कमतरीन राकिमुस्सुतूर "अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फसाहती" अपने पीरों के पीर यानी हुजूर मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह के पीर-व-मुर्शिद हुजूर सैय्यदुना फखरुल आरेफीन ख्वाजा सैय्यद शाह मौलाना अब्दुल हई चाटगामी रज़ि अल्लाह अन्हु की इत्तेबा में हज़रात अहलेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम को "अलैहिस्सलाम" बोलता और लिखता है जिसकी पैरवी तमाम जहाँगीरियों, रज़ायिय्यों, इनायतियों, राहतियों, फसाहतियों को करनी लाज़मी है, वर्ना मामूलात शैख से बगावत और इनकार लाज़िम आएगा। सीरत फखरुल आरेफीन शरीफ निहायत ही

मुस्तनद किताब है। सिलसिल-ए-जहाँगीरिया की रीढ़ की हड्डी है। सीरते फखरुल आरेफीन शरीफ में जहाँ कहीं भी हज़रात अहलेबैत अतहार के नाम पाक आये हैं ''अलैहिस्सलाम'' लिखा पाओगे। हुज़ूर सैय्यदुना मौलाना सैय्यद शाह ख्वाजा अब्दुल हई फखरुल आरेफीन चाटगामी कुद्दुस सिर्रहु ने अहलेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम को इस्तक्लालन अलैहिस्सलाम बोलने और लिखने के सुबूत में कुरआन-व-हदीस की रौशनी में एक सौ साल मुतब्बहर मुकतदर उलमाए रब्बानीन की तहकीकात और दस्तखत से लबरेज़ एक किताब ही लिख दी है जिसका तज़किरा बड़ी सेराहत के साथ ''सीरत फखरुल आरेफीन शरीफ'' में कर दिया गया है।

सिलसिल-ए-बयान ये है कि हुज़ूर सैय्यदुना मौलाना अली करमल्लाहु वजहहु अलैहिस्सलाम अपनी बेमिसाल खूबियों, बलन्दियों के बावजूद ये फरमाते हैं कि ''मा अना इल्ला रजलुम्मिनल मुस्लिमीन (बुखारी शरीफ स० 518 जि० 1) बस मैं मुसलमानों में सिर्फ एक मामूली आदमी हूँ।'' रजलु की तंकीर और तंवीन तहकीर ने बलागत कलाम में जान डाल दी है। ये खाकसारी, ये है अबू तुराबी। इस नेमत के मम्बा आप ही हैं। आप ही से इस नेमत के तमाम चश्मे फूटे हैं।

अब सुतूरे बाला की रौशनी में ''हुज़ूर सनदुल औलिया'' को देखो आप हुस्ने सीरत में, जमाले सूरत में, सहीउन्नस्ल, पाक नसब, आली हसब, अफगानी हैं। लफ्ज़ ''खाँ'' इस घराना का खास निशान है। इम्तियाज़ी पहचान है, मगर फनाए नफ्स, खाकसारी, आजिज़ी, निस्बते अबू तुराबी से लबरेज़ आपका दस्तखत मुलाहिज़ा करो। ''मुहम्मद फसाहत हसन अफी अन्हु'' लफ्ज़ खान की जगह अफी अन्हु बारगाहे इलाही में फरोतनी, मानी, कितना हसीन, कितना सादा, निस्बते अबू तुराबी से किस कदर माला माल है। ये नूरानी दस्तखत ''मुहम्मद फसाहत हसन अफी अन्हु'' ये है फसाहती फकीरी ये है नेमत अबू तुराबी। इस नेमत अबू तुराबी से सरफराज़ होने के लिए खुद अमल किया और अपने मुरीदों से भी कराया। इस को कहते हैं दरवेशी, इस को कहते हैं दरिया दिली।

बिल्कुल इसी के हूबहू टू कापी आपके नूरे नज़र, पार-ए-जिगर साहबे सज्जादा का भी दस्तखत है ''मुहम्मद सबाहत हसन अफी अन्हु''।

सज्जादा नशीनः

आपके सज्जादा नशीन आपके दिल के टुकड़े, आँखों की रौशनी बड़े

साहबज़ादा ख्वाजा मुहम्मद सबाहत हसन शाह "फसाहती" हैं। जो आपके मुरीद भी और खलीफ-ए-आज़म भी आपको देखने के बाद हकीकत ने ये आवाज़ दी आप अपने वालिद मखदूम ख्वाजा सनदुल औलिया की हर रुख से बिल्कुल टू कापी हैं। सूरत भी वही, सीरत भी, खू भी वही, बू भी वही, रंग भी वही, ढंग भी वही, गुफ्तार भी वही, रफ्तार भी वही और तर्ज़ भी वही। तबस्सुम भी वही, मुहब्बत भी वही, मुरीदों से प्यार भी वही, दिलजोई भी वहीं। हदीसे पाक है कि "अलवलदर ला बैहि" यानी बेटा अपने बाप का मज़हर होता है और ये सरापा सच है कि इस अज़ीमुल बरकत खानवादा का हर साहब सज्जादा अपने मुरिसे आला की तमाम खूबियों का जामा और विरासत है। ये बहुत ही अल्ताफ-व-नवाज़िश का मामला है कि आप अपने बुजुर्गों के खुतूत-व-नुकूश पर बड़ी साबित कदमी, दिल जमई के साथ पूरी लगन और धुन से तन, मन, धन से पूरे मुल्क में इशाअते सिलसिला के लिए काम कर रहे हैं। मुरीदीन की तादाद मुसलसल दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है और हुज़ूर दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह का सिलसिल-ए-मुबारका बराबर फैलता ही जा रहा है "अल्लाहुम्मा ज़द फज़द"।

ये आपका बहुत ऊँचा मर्तबा है कि आप रज़ाई, इनायती, राहती, फसाहती, चार चार दरगाहों के सज्जादा नशीन हैं।

करामतः

आम ज़हन बुजुर्गों के हालात में करामत को ज़रुर तलाश करता है, अहले सुन्नत व जमाअत के अकाएद की तमाम किताबों में निहायत साफ शफ्फाफ ये इबारत ज़रुर मिलती है कि "करामातुल औलियाए हक" यानी औलियाए केराम की करामतें हक हैं। और ये तमाम अहले सुन्नत व जमाअत का अकीदा है कि महबूबाने खुदा से ऐसी चीज़ें सादिर हुई हैं और होती रहती हैं जो समझ से बाहर हैं। मसलन मुर्दों को ज़िन्दा कर देना, पैदाइशी अंधे को अंखियारा और कोढ़ी को अच्छा कर देना कम खाने में काफी लोगों को आसूदा कर देना, बाँझ का साहिबे औलाद हो जाना, ज़मीन पर चलने की तरह दरिया पर चलना, हवा में परवाज़ करना वगैरा। साबेकीन हज़रात अम्बिाए केराम अलैहिमुस्सलाम के बुजुर्ग अम्मतियों से जो करामतें ज़ाहिर हुई हैं दर हकीकत ये सब उन के अम्बिाए इज़ाम अलैहिमुस्सलाम के मोजिज़ात ही का फैज़ है।

हज़रात सहाब-ए-अखियार, ताबेईन अबरार, उलमाए रब्बानीन,

औलियाए सालेहीन, गौसे आज़म, ख्वाजा गरीब नवाज़ और बुज़ुर्गाने पाक रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन से जो करामतें सादिर हुई हैं, ये सब हुज़ूर रसूले दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के मोजिज़ात मुबारका ही के फुयूज़-व-बरकात हैं। बिला शक तमाम करामतें हक हैं मगर ये सब शाखें और फरअ हैं। तो फिर असल करामत क्या है? मुलाहिज़ा फरमाएँ:

बकसरत वाकेआत हैं कि मुरीद होने के लिए किसी बुज़ुर्ग की बारगाह में हाज़िर हुए, बरसों रहे, मगर जिस चीज़ की तलाश थी वह न पाकर वापस होने लगे तो उस बुज़ुर्ग ने फरमाया कि "मियाँ" वापस क्यों जा रहे हो? अर्ज़ किया कि हुज़ूर! आपकी खिदमत में मुद्दतों रहा। मगर मैंने कोई करामत नहीं देखी। फरमाया अच्छा ये बताओ कि मेरी ज़िन्दगी का कोई लम्हा इत्तेबाये नबवी के खिलाफ पाया। अर्ज़ किया कि नहीं। फरमाया कि "मियाँ" असल करामत यही है। बाकी सब शाखें हैं। हुज़ूर कुतुबुल आरेफीन ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह उर्फ दादा मियाँ, हुजुर शैखुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह, हुज़ूर सनदुस्सालेकीन ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह, हुज़ूर सनदुल औलिया ख्वाजा अल्हाज मुहम्मद फसाहत हसन शाह अलैहिमुर्रहमा की भी असल करामत यही है कि ज़िन्दगी का हर लम्हा, हर गोशा इत्तेबा-ए-नबवी, रज़ा-ए-मुस्तफवी के नूरानी साँचे में ढ़ला है और ऐसे जिन करामतों को आम लोग ढूँढते हैं मसलन कोढ़ी और जुज़ामी का अच्छा हो जाना। अंधे का आँख वाला हो जाना। निहायत कम खाना है और बेशुमार लोगों का पेट भर खा लेना और फिर भी खाना का बच जाना, कम वक्त में लम्बा सफर तै करा देना वगैरा ये तमाम करामतें उन चारों मशाएख-ए-इज़ाम से ज़ाहिर हुई हैं। एक एक की तफ्सील पूरी सनद और सुबूत के साथ इंशा अल्लाह फिर किसी दूसरी फुर्सत में पेश करूँगा।

विसाल सनदुल औलिया:

28 जमादुल आखिर 1422 हि० मुताबिक 17 सितम्बर 2001 ई० बरोज़ दोशम्बा बउम्र छियालीस साल बवक्त विसाल हुज़ूर दादा मियाँ की उम्र मुबारक भी यही थी।

नमाज़े जनाज़ा:

ये बहुत ही बेमिसाल, लाजवाब नवाज़िश-व-करम का मामला है कि मेरे पीर-व-मुर्शिद हुज़ूर सनदुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह अपनी हयात

ज़ाहिरा में मुझ राकिमुस्सुतूर अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फसाहती से नमाज़ पढ़वाते रहे और खुद पढ़ते रहे। अपने जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़वाई। इस बेगुबार हकीकत में कोई शक नहीं कि मुझ मज़हरी फसाहती पर मेरे पीर हर रुख से, हर तरह से मखसूस, मुमताज़, मुन्फरिद, तरजीही फसाहती नज़र रही है, जिसका हक शुक्रिया नस्लन बाद नस्लन कयामत तक अदा नहीं हो सकता है।

उर्स सरापा कुदुसः

हर साल आपका उर्से मुबारक 26,27,28,29 जमादुल आखिर को किब्ला मुहम्मद सबाहत हसनशाह की सज्जादा नशीनी में बमुकाम भैंसोड़ी शरीफ ज़िला रामपुर (यू०पी०) बहुत ही रहमत बरसती फिज़ा में होता है। बकसरत मुरीदीन, मोतकिदीन, उलमा, मशाएख, पीराने इज़ाम की आमद आमद से बड़ा ही पुर कैफ माहौल हो जाता है। पूरा कस्बा भैंसोड़ी शरीफ नेमत-व-नूर में डूब जाता है। हर तरफ खुशहाली, हरियाली छा जाती है और सब फसाहती फुयूज़-व-बरकात से खूब खूब सैराब हो जाते हैं। दुआ है कि परवरदिगार हमेशा मेरे पीर-व-मुर्शिद के आस्ताना से और तमाम पीराने केराम के आस्तानों से तेरी लाज़वाल रहमतों, नेमतों के धारे बहते रहे और हम जमीअ वाबस्तगान खूब जी भर कर नहाते रहे हैं। आमीन! बजाहे हबीबिहिल करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम।

कुत्बा
अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फसाहती
इब्ने आरिफे रब्बानी
हज़रत मौलाना अल्हाज मुहम्मद सज्जाद कुद्दुस सिर्रहु
मौलाना मंज़िल, जे 2/12, अवधूपुरा, बनारस
23 रमज़ानुल मुबारक 1431 हि०
मुताबिक 3 सितम्बर 2010
बरोज़ जुमा मुबारका

شجرۂ طیبہ سلسلۂ علیّہ قادریہ، چشتیہ، نقشبندیہ، سہروردیہ، ابوالعلائیہ، رضائیہ، عنایتی، راحتی، فصاحتی، صباحتی

لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

درود شریف، الحمد شریف (ایک مرتبہ)

کلمۂ شہادت (ایک مرتبہ)

(۱) مظہر العجائب سیدنا علی کرم اللہ وجہہ

(۲) سیدنا حضرت امام حسین علیہ السلام

(۳) سیدنا حضرت امام زین العابدین علیہ السلام

(۴) حضرت امام باقر علیہ السلام

(۵) سیدنا حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام

(۶) سیدنا حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام

(۷) سیدنا امام علی بن موسیٰ رضا علیہ السلام

(۸) حضرت شیخ معروف کرخی قدس اللہ سرہٗ العزیز

(۹) حضرت سری سقطی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۰) سید الطائفہ حضرت جنید بغدادی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۱) حضرت شیخ ابوبکر شبلی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۲) حضرت شیخ رحیم الدین عیاض قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۳) حضرت شیخ عبدالعزیز یمنی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۴) حضرت ابو یوسف طرطوسی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۵) حضرت ابوالحسن علی الھنکاری الغزنوی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۶) حضرت ابوسعید مبارک مخرمی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۷) حضرت غوث الثقلین محبوب سبحانی قطب ربانی سید محی الدین شیخ عبدالقادر جیلانی قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۸) شیخ الشیوخ شیخ شہاب الدین قدس اللہ سرہ العزیز

(۱۹) حضرت سید نظام الدین قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۰) حضرت میر سید مبارک غزنوی قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۱) حضرت شاہ نجم الدین قلندر قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۲) حضرت شاہ قطب الدین بینائے دل قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۳) حضرت میر سید فضل اللہ عرف سید گسائیں قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۴) حضرت میر سید محمود قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۵) حضرت میر سید نصیر الدین قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۶) حضرت میر سید تقی الدین عرف میر تقی درویش قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۷) حضرت میر سید نظام الدین قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۸) حضرت میر سید اہل اللہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۲۹) حضرت میر سید جعفر دیوان قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۰) حضرت میر سید خلیل الدین قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۱) امام العارفین سلطان الواصلین حضرت شاہ منعم پاک باز قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۲) حضرت مولانا شاہ حسن قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۳) سلطان المعرفت حضرت مخدوم شاہ حسن دوست الملقب شاہ فرحت اللہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۴) عاشق رسول الثقلین مقبول کونین وسیلتنا فی الدارین حضرت شاہ مظہر حسین قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۵) امام الموحدین محبوب ربانی حضرت شاہ محمد مہدی الفاروقی القادری قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۶) قطب العارفین سلطان الواصلین وارث علوم مرتضوی حضرت شاہ امداد علی قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۷) سلطان العارفین والعاشقین الفانی فی الذات سبحانی حضرت شاہ مخلص الرحمٰن قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۸) فخر العارفین شیخ الکاملین سیدنا حضرت عبدالحیٔ قدس اللہ سرہ العزیز

(۳۹) شیخ الواصلین فخر الکاملین تاجدار کشور معرفت سلطان العاشقین حضرت محمد نبی رضا شاہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۴۰) صدق الصادقین زبدۃ العارفین محبوب حق حضرت محمد عنایت حسن شاہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۴۱) شمس العارفین راحت العاشقین ہادیٔ دین مصطفیٰ سرتاج اولیا حضرت محمد راحت حسن شاہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۴۲) مخدوم المشائخ محبوب مصطفےٰ سند الاولیا الحاج محمد فصاحت حسن شاہ قدس اللہ سرہ العزیز

(۴۳) محبوب قلب عارفاں نعمت بحرولایت حضرت خواجہ محمد صباحت حسن شاہ فصاحتی سجادہ نشین طال اللہ حیاتہٗ

سجادہ نشین آستانہ خواجہ محمد نبی رضا شاہ المعروف دادا میاں لکھنؤ و سندالاولیا الحاج خواجہ محمد فصاحت حسن شاہ و خواجہ الحاج محمد راحت حسن شاہ و خواجہ الحاج محمد عنایت حسن شاہ بھینسوڑی شریف، رامپور